RAJYA SABHA

Wednesday, the 17th March, 1999/26 Phalguna, 1920 (Saka)

The House met at eleven of the clock, **Mr. Chairman:** *in the Chair.*

ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

श्री संघ प्रिय गौतम: सभापति जी, अनुसूचित जाति और जन-जातियों....

श्री सभापति: देखिए, मैंने कुछ अलाऊ नहीं किया है। ...(व्यवधान)... मैंने कुछ अलाऊ नहीं किया है ... (व्यवधान)... जो यह कहेंगे कुछ रिकार्ड पर नहीं जाएगा।

Nothing will go on record. ...(*Interruptions*)... Nothing will go on record. Nothing can be raised without my permission, and you have not taken my permission. ...(*Interruptions*)... Nothing will go on record.

सशस्त्र सेना मेडिकल कालेज, पुणे से छात्रों का गायब होना

*301. **श्री रामजीलाल:** क्या रक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) वर्ष 1996 में और उसके बाद पुणे के सशस्त्र सेना मेडिकल कालेज से कितने छात्र गायब पाए गए और उनमें से कितने छात्रों के अभिभावकों को इसकी सूचना दी गई और कब-कब दी गई;

(ख) मेडिकल कालेज ने इन छात्रों को ढूंढने के लिए अब तक क्या प्रयास किए हैं और उसके क्या परिणाम निकले;

(ग) क्या इस मेडिकल कालेज ने संबंधित अभिभावकों को भी अपने प्रयासों और उसके परिणामों से अवगत कराया था; और

(घ) यदि नहीं, तो उसके क्या कारण हैं?

रक्षा मंत्री (श्री जार्ज फर्नान्डीज़): (क) से (घ) सदन के पटल पर एक विवरण-पत्र रखा गया है।

ऐसा एक मामला हुआ था। गुमशुदा कैडेट के माता-पिता तथा स्थानीय अभिभावक को दिनांक 4 दिसंबर, 1996 को फोन पर सूचित कर दिया गया था। सशस्त्र सेना चिकित्सा कॉलेज के प्राधिकारी गुमशुदा कैडेट को खोजने का प्रयास करते रहे हैं। इन प्रयासों में होस्टल/कॉलेज परिसरों और भोपाल जहां कैडेट सशस्त्र सेना चिकित्सा कॉलेज में भर्ती होने से पहले पढ़ रहा था, में कैडेट की तलाश, कैडेट के गुम होने की स्थानीय पुलिस में प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज कराना, दूरदर्शन, मुम्बई के माध्यम सहित, पूरे राज्य में उसके गुम होने का संदेश भेजना, समाचार पत्रों में बार-बार विज्ञापन देना तथा जांच अदालत का गठन आदि शामिल हैं। इस संबंध में कॉलेज के प्राधिकारी पुलिस प्राधिकारियों से संपर्क बनाए हुए हैं।

घटना की सूचना दिए जाने के तुरंत बाद इस कैडेट के माता-पिता 21 दिन तक पूना में ठहरे थे और कैडेट को खोजने के प्रयासों में उनका भी सहयोग लिया गया। बाद में लापता कैडेट के पिता महानिदेशक, सशस्त्र सेना चिकित्सा सेवा के कार्यालय में भी गए और उन्हें ताजा स्थिति से अवगत कराया गया।

श्री रामजीलाल: सभापति महोदय, आपके द्वारा मैं मंत्री जी से जानना चाहूंगा, मंत्री जी ने ऐसा जवाब दिया जैसे छठी जमात का प्रस्ताव लिखते हैं। आपने आदेश दिया कि टु दि प्वाईंट क्वेश्चन पूछिए जैसा मंत्री जी का रिप्लाई टु दि प्वाइंट आया है। तो मैं आपके द्वारा प्वाईंटेड क्वेश्चन पूछना चाहूंगा कि कैडेट कब गायब हुआ था, उसकी तारीख पुलिस में कब रिपोर्ट करी उसकी तारीख, गुमशुदा होने की तारीख और जांच अदालत का गठन जो किया गया उसकी तारीख और कार्य समय क्या है?

श्री जार्ज फर्नान्डीज़: सर, निशांत दीवान जो लड़के का नाम है वह मेडिकल कालेज में दाखिल हो गया था, 28 दिसम्बर 1996 तक वह ट्रेनिंग प्रोग्राम में रहा 18 सितम्बर, 1996 से 24 अक्टूबर, 1996 तक, जब फर्स्ट टर्म उसका था। 24 अक्टूबर को वह छुट्टी पर गए जब कि फर्स्ट टर्म के बाद वैकेशन शुरू हुआ। जो जानकारी है उसके मुताबिक वह अपने घर गए थे। 18 नवम्बर को वह वापस आए और 18 नवम्बर से 23 नवम्बर तक वह सेकंड टर्म की ट्रेनिंग में रहे। कुल मिलाकर 5 दिन 24 नवम्बर को उनके अपने साथी जो उनके होस्टल रूम में रहने वाले दो साथी थे और अन्य लोगों ने उन्हें आखिरी बार देखा। फिर वह नहीं आए। उसके बाद वह दिखाई नहीं पड़े। 28 नवम्बर को उनके कमरे में उनके साथ रहने वाले दो जवानों ने फ्लोर कैडेट केप्टन को सूचना दी कि यह गैर-हाजिर हैं, यह नहीं हैं। 1 दिसम्बर को फ्लोर कैडेट केप्टन ने ब्लाक कैडेट केप्टन को सूचना दी और 3 दिसम्बर को ब्लाक कैडेट केप्टन ने रेजिडेंट वार्डन को सूचना दी,

लेफ्टिनेंट कर्नल प्रताप को सूचना दी और उन्होंने तत्काल लेफ्टिनेंट कर्नल अरविन्द गुप्ता को, जो आफिसियेटिंग रेजिडेंट वार्डन हैं, उनको सूचना दी और 4 दिसम्बर को प्रताप ने कर्नल एडमिनिस्ट्रेटर को सूचना दी। लड़के के घर पर टेलीफोन से सम्पर्क करने के बाद रेजिडेंट वार्डन ने कहा कि पुलिस को खबर दी जाए और उसी दिन शाम को 5 बजे उन्होंने सिविल स्टेशन में एफआई.आर. लाज की। 5 दिसम्बर को उसके परिवार-जन आए और 5 दिसम्बर से अनेक स्थानों पर सर्च शुरू हुई। उसके बाद अखबारों में विज्ञापन दिए गए और पुलिस कमिश्नर से मुलाकातें हुईं और एक कोर्ट आफ इन्क्वायरी बिठा दी गई। लेकिन किसी भी प्रकार की कोई खबर अभी तक हासिल नहीं हो पाई है और आखिरी बार जो होस्टल की ओर से, मेडिकल कालेज की ओर से पुलिस को सूचना दी गई थी याद दिलाने के लिए, वह 5 मार्च, 1999 को गई थी।

श्री रामजीलाल: सभापति जी, मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या उस छात्र के माता-पिता ने अधिकारियों द्वारा सहयोग नहीं दिये जाने का आरोप लगाया है? सशस्त्र सेना मेडिकल कालेज से इस तरह से छात्रों का गायब हो जाना और सवा दो साल तक उसकी जानकारी न होना, यह बहुत चिन्ता का विषय है।

श्री जार्ज फर्नान्डीज़: सभापति जी, ऐसी कोई शिकायत हमारे पास नहीं आई है और न कोई ऐसी सूचना मुझे दी गई है। जहां तक खोज करने की बात है, जो खोज उस कालेज की ओर से की जा सकती थी, वह की गई। अब मामला पुलिस के हाथ में है और सिविल पुलिस उसमें जो कुछ करे, उसी पर निर्भर रहना होगा। हमारे इंस्टीट्यूशन के पास ऐसा कोई इन्तज़ाम नहीं है कि हम खोज कर सकें। लेकिन विज्ञापन वगैरह जो दिये गये, वह कालेज की ओर से दिये गये।

श्री ईश दत्त यादव: माननीय सभापति जी, यह गम्भीर घटना है। दो साल से अधिक समय हो गया लेकिन उस नौजवान का आज तक पता नहीं चला। मैं माननीय मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि क्या पुलिस को सूचना देने के बाद आपका उत्तरदायित्व समाप्त हो गया? आपने एफ॰ आई॰ आर॰ किया, उस एफ॰आई॰आर॰ को परस्यु किया गया या नहीं? दो साल में एफ॰आई॰आर॰ की जो विवेचना हुई होगी, इनवैस्टीगेशन हुआ होगा, उसका कुछ परिणाम आया है या नहीं, उसकी आपको जानकारी है या नहीं?

श्री जार्ज फर्नान्डीज़: सभापति जी, पुलिस से बार-बार उच्च स्तर पर उसके बारे में सम्पर्क होता रहा है। उनसे अभी तक जो जानकारी मिली है, वह यही है कि हम लोग प्रयास में हैं। लेकिन हमें कोई पता नहीं लग रहा है।

SHRI BRATIN SENGUPTA: I would request the hon. Minister to take some more initiatives keeping in view the seriousness of the case and direct the police officials who are entrusted with the inquiry to expedite the case. They should take it on a humanitarian ground and in a more (*Interruptions*) conscientious manner.

श्री जार्ज फर्नान्डीज़: वह कर दिया जाएगा जो हो ही रहा है लेकिन और भी एक बार किया जाएगा।

विद्युत परियोजनाओं द्वारा क्षमता का उपयोग

*302. श्री बलवन्त सिंह रामूवालिया:
श्री कपिल सिब्बल:†

क्या विद्युत मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या यह सच है कि देश में बहुत सी विद्युत उत्पादन परियोजनाएं विद्युत उत्पादन के लिए अपनी-अपनी कुल उत्पादन क्षमता के 90 प्रतिशत का उपयोग कर रही हैं;

(ख) यदि हां, तो वे परियोजनाएं कौन-कौन सी हैं और वे बिजली का कुल कितना उत्पादन कर रही हैं;

(ग) क्या यह भी सच है कि उनकी विद्युत उत्पादन संबंधी लागत अन्य परियोजनाओं की लागत से कम है; और

(घ) यदि हां, तो उन परियोजनाओं की विद्युत उत्पादन लागत क्या है जो अपनी-अपनी कुल उत्पादन क्षमता के केवल 90 प्रतिशत का उपयोग कर रही हैं?

THE MINISTER OF POWER, MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS AND MINISTER OF NON-CONVENTIONAL ENERGY SOURCES (SHRI P.R. KUMARAMANGALAM): (a) to (d) A Statement is laid on the Table of the House.

Statement

(a) and (b) The names of the power stations which utilised 90 per cent of their total installed capacity for power generation alongwith total generation of power during 1997-98 and

†सभा में यह प्रश्न श्री कपिल सिब्बल द्वारा पूछा गया।